B.A. I Hindi Hons.

'उपन्यास का स्वरूप' का शेष

प्राध्यापक- डॉ॰ सतीश चन्द्र पाण्डेय
एस॰एस॰ कॉलेज, जहानाबाद

अब तक हमने उपन्यास के विभिन्न तत्वों का अध्ययन किया है। आज हम उपन्यास के एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व भाषा और शैली पर विचार करेंगे।

भाषा एवं शैली- भाषा एवं शैली दो अलग-अलग विषय हैं। प्रथम में अभिव्यक्ति या लेखन के माध्यम की बात की जाती है तो दूसरे में अभिव्यक्ति के तरीके की, जैसा कि स्पष्ट ही है कि भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा कोई भी साहित्यिक विधा आकार पाती है। यहाँ भाषा का प्रयोग अतिव्याप्ति में नहीं विवक्षित होता वरन् इसका एक सीमित अर्थ में प्रयोग होता है। इसके निर्धारण के अनेक मानक हो सकते हैं। जैसे उपन्यास में कथानक, पात्र, वातावरण इत्यादि ऐसे आधार हैं जिनके आधार पर भाषा का विशेषकर औपन्यासिक भाषा का निर्धारण हो सकता है। यही कारण है कि विद्वानों के एक वर्ग की मान्यता है कि उपन्यास की भाषा उसके कथात्मक विन्यास के अनुकूल होनी चाहिए। एक वर्ग का मानना है कि उपन्यास की भाषा औपन्यासिक पात्रों के अनुकूल होनी चाहिए। अन्य अनेक आलोचक घटना के अनुकूल भाषा की अपेक्षा रखते हैं। मेरी दृष्टि में भाषा उपर्युक्त समस्त आधारों के अनुरूप

होनी चाहिए। यही कारण है कि कथानक एक विशेष प्रकार की भाषा की मांग करता है। क्योंकि कथानक निर्माण में अनेक पात्रों की महत् भूमिका होती है अतः भाषा प्रयोग में पात्रों के अनुकूल भाषा का भी प्रयोग करना अपेक्षित है। इसीलिए औपन्यासिक संरचना में भाषा की महत् भूमिका होती है। इस कसौटी पर हम प्रेमचन्द के उपन्यासों की भाषा को आदर्श मान सकते हैं। गोदान में होरी की भाषा और डॉ० मेहता की भाषा, धनिया और मालती की भाषा, रायसाहब, खन्ना इत्यादि की भाषाओं में अन्तर स्पष्ट देखा जा सकता है। इस दृष्टि से हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के उपन्यासों की भाषा में समस्त पात्रों को संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग करते देखकर उसकी स्वाभाविकता में सन्देह होने लगता है।

इसी प्रकार ऐतिहासिक उपन्यासों की भाषा में भी परिवर्तन अपेक्षित है। जिस कालखंड का समकालीन उपन्यास चित्रण करता है उस काल में बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग अपेक्षित है अन्यथा उसमें विश्वसनीयता तथा स्वाभाविकता का अभाव हो जाएगा अतः यह स्पष्ट है कि उपन्यास की भाषा - पात्र, कथानक, देशकाल के अनुकूल होनी चाहिए तभी उपन्यास की संरचना की संभावना बढ़ जाती है वैसे औपन्यासिक संरचना के अनेक आधार हैं किंतु भाषा का उचित व स्वाभाविक प्रयोग अपना अलग महत्व रखता है।